Toppersnotes®
Unleash the topper in you

उत्तराखण्ड

राज्य सिविल सेवा

उत्तराखण्ड सम्मिलित राज्य सिविल/प्रवर अधीनस्थ सेवा परीक्षा

भाग - 4

आर्थिक एवं सामाजिक विकास

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	अर्थव्यवस्था के मूल सिद्धांत	1
2	मुद्रा, मुद्रा आपूर्ति और मौद्रिक नीति	8
3	मुद्रास्फीति	15
4	वित्तीय मध्यस्थ (बैंकिंग)	21
5	भारत में वित्तीय बाजार (मुद्रा और पूंजी)	29
6	बजट	34
7	राजकोषीय नीति और कराधान	38
8	सब्सिडी और सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS)	48
9	बाह्य क्षेत्र और भुगतान संतुलन	52
10	कृषि	58
11	उद्योग	70
12	सेवा क्षेत्र	78
13	गरीबी	83
14	सामाजिक न्याय और सशक्तिकरण	93
15	जनसंख्या	100
16	पंचवर्षीय योजनाएँ	103
17	सरकारी योजनाएँ	106
18	अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संगठन	113

1 CHAPTER अर्थव्यवस्था के मूल सिद्धांत

आर्थिक वृद्धि और आर्थिक विकास

आर्थिक वृद्धि:

- किसी देश में एक निश्चित अवधि के दौरान वस्तुओं और सेवाओं के वास्तविक उत्पादन तथा उनके मोद्रिक मूल्य में हुई वृद्धि ।
- इसे सकल घरेलू उत्पाद या प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि जैसे मात्रात्मक कारकों द्वारा मापा जाता है।
- यह उच्च उत्पादकता को दर्शाता है लेकिन यह जरूरी नही की जीवन की गुणवत्ता और समानता में भी सुधार हुआ हो ।

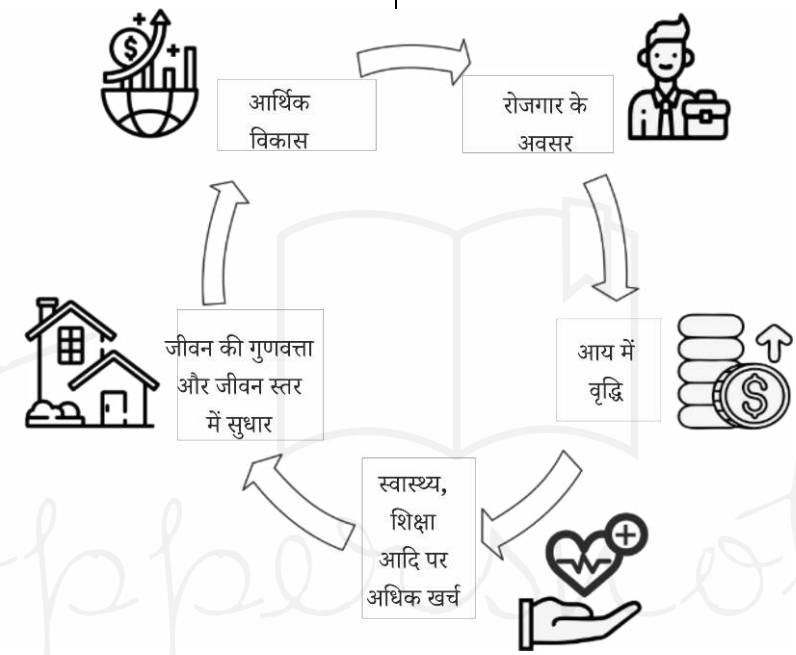

आर्थिक विकास:

- यह एक व्यापक अवधारणा है, जो जनसंख्या के जीवन की समग्र गुणवत्ता और उनके कल्याण में सुधार को सम्मिलित करती है। आर्थिक विकास को मापने के लिए एचडीआई (मानव विकास सूचकांक), लिंग-संबंधी सूचकांक, गरीबी सूचकांक (एचपीआई), शिशु मृत्यु दर, साक्षरता दर आदि जैसे गुणात्मक उपायों का उपयोग किया जाता है।
- यह किसी देश में जीवन की गुणवत्ता में प्रगति को दर्शाता है।

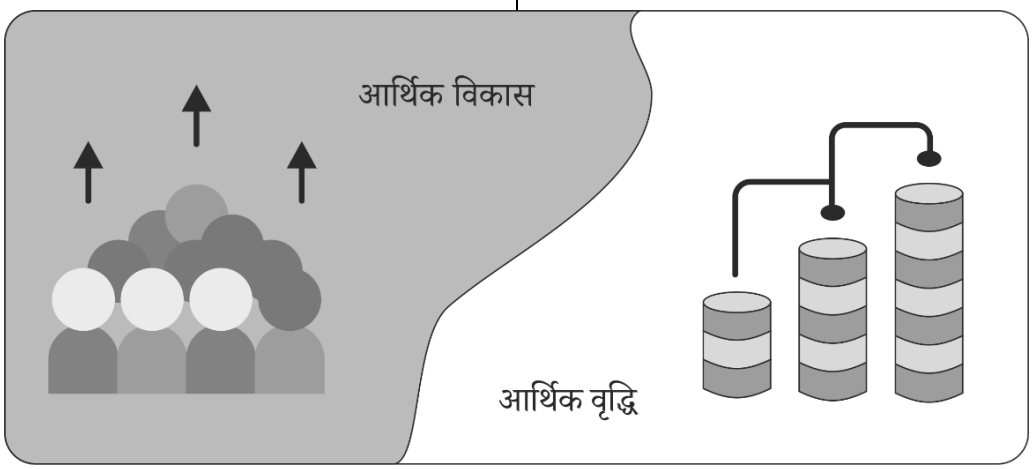

Toppersnotes Unleash the topper in you

राष्ट्रीय आय

राष्ट्रीय आय यह किसी वित्तीय वर्ष के दौरान देश के नागरिकों द्वारा उत्पादित अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का कुल मूल्य होता है, जिसमें मूल्यह्रास को समायोजित कर लिया जाता है। राष्ट्रीय आय के कई महत्वपूर्ण पहलू होते हैं, जिनमें सकल घरेलू उत्पाद (GDP), सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP), शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (NNP), प्रति व्यक्ति आय, व्यक्तिगत आय और व्यय योग्य आय (डिस्पोजेबल आय) शामिल हैं।

1. सकल घरेलू उत्पाद (GDP)

- एक निर्धारित वित्तीय वर्ष के दौरान देश की घरेलू या आर्थिक सीमा (territory) में उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का कुल मूल्य सकल घरेलू उत्पाद (GDP) कहलाता है।
- GDP की गणना के लिए घरेलू या आर्थिक सीमाओं कई तत्व शामिल होते हैं, जैसे:
  - ✓ किसी देश की भौगोलिक सीमाएँ, जिनमें उसका प्रादेशिक जल भी शामिल होता है।
  - ✓ उस देश के विदेशों में स्थित दूतावास, वाणिज्य दूतावास और सैन्य अड्डे।
  - ✓ देश के निवासियों द्वारा स्वामित्व और संचालित किए जाने वाले जहाज और विमान।
- नियमित अवधियों पर अनुमानित (जैसे त्रैमासिक, या वार्षिक)।
  - ✓ भारत के संदर्भ में यह अवधि 1 अप्रैल से 31 मार्च तक होती है।
- GDP की गणना केंद्रीय सांख्यिकी संगठन (CSO), जो सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MoSPI) के अधीन है, द्वारा की जाती है।
- यह एक 'मात्रात्मक अवधारणा' है जो देश की अर्थव्यवस्था की आंतरिक क्षमता को दर्शाती है।

GDP की सीमाएं

- यह मात्रात्मक अवधारणा है, गुणात्मक नहीं।
- पूँजीगत लाभ को GDP में शामिल नही किया जाता ।
- बहिष्करण तथा समावेश की समस्या ।
- जीडीपी यह जानकारी नहीं देता है कि जनसंख्या के बीच आय कैसे वितरित की गयी है।
- यह एक निश्चित क्षेत्र (territory) की सीमा तक ही सीमित होती है।
- जीडीपी केवल उत्पादित नई वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य को मापता है। सेकेंड-हैंड सामान से जुड़े लेनदेन, जैसे प्रयुक्त कारों या फर्नीचर की पुनर्विक्रय, जीडीपी गणना में शामिल नहीं हैं।
- GDP यह नहीं बताता कि क्या उत्पादित किया जा रहा है और इसमें घरेलू कार्य जैसे बच्चों की देखभाल, बुजुर्गों की देखभाल आदि भी शामिल नहीं है।

GDP की गणना के तरीके

GDP गणना के तरीके		
व्यय विधि उपभोग + निवेश + सरकारी व्यय + शुद्ध निर्यात (अर्थात निर्यात - आयात) **सूत्र: C + I + G + (X – M)**	आय विधि किराया + वेतन(मजदूरी) + ब्याज + लाभ	मूल्य वर्धित/आउटपुट विधि सभी वस्तुओं और सेवाओं का अंतिम मूल्य – मध्यवर्ती लागत

GDP के प्रकार	
नाममात्र GDP (Nominal GDP)	**वास्तविक GDP (Real GDP)**
➢ यह देश के भीतर उत्पादित कुल वस्तुओं व सेवाओं का मूल्य दर्शाता है। ➢ इसमें मुद्रास्फीति का समायोजन नहीं किया जाता। ➢ यह वर्तमान वर्ष की कीमतों पर आधारित होती है। ➢ इसका मूल्य उच्च होता है। ➢ यह एक वर्ष की तिमाहियों की तुलना करती है। ➢ यह अर्थव्यवस्था के वास्तविक प्रदर्शन को सही ढंग से नहीं दर्शाती है । **सूत्र:** नाममात्र GDP = वर्तमान वर्ष में उत्पादन × वर्तमान वर्ष की कीमत	➢ GDP को सामान्य मूल्य स्तर में परिवर्तनों के साथ समायोजित किया जाता है। ➢ इसमें मुद्रास्फीति का समायोजन किया जाता। ➢ यह नियमित कीमतों पर आधारित होती है। ➢ इसका मूल्य निम्न होता है। ➢ यह दो या अधिक वित्तीय वर्षों की तुलना करती है। ➢ यह केवल वस्तुओं और सेवाओं के वास्तविक उत्पादन में परिवर्तन को दर्शाती है। **सूत्र:** वास्तविक GDP = वर्तमान वर्ष में उत्पादन × आधार वर्ष की कीमत

GDP की गणना के विभिन्न पहलू	
GDP डिफ्लेटर	**GDP वृद्धि दर**
➢ यह वास्तविक GDP और नाममात्र GDP का अनुपात है। ➢ यह दर्शाता है कि आधार वर्ष से चालू वर्ष की कीमतों में कितनी वृद्धि हुई है। ➢ GDP डिफ्लेटर मुद्रास्फीति का मापक है तथा यह **CPI, WPI** की तुलना में अधिक सटीक व व्यापक है परंतु यह कम प्रचलित है क्योकि इसकी गणना त्रिमाही आधार पर की जाती हैं जबकी **CPI, WPI** मासिक आधार पर जारी किए जाते है।	➢ यह मापता है कि अर्थव्यवस्था कितनी तेजी से बढ़ रही है। ➢ लगातार दो वर्षों या तिमाहियों में GDP के परिवर्तन को मापता है।
बाजार मूल्य पर GDP (GDP_{MP}) **इसे नाममात्र जीडीपी भी कहते है।** ➢ साधन लगत (FC) पर शुद्ध घरेलू उत्पाद + मूल्यह्रास + शुद्ध अप्रत्यक्ष कर - सब्सिडी।	**कारक लागत पर GDP (GDP_{FC})** ➢ यह किसी वस्तु के उत्पादन की कुल लागत है, जिसमें भूमि, श्रम, पूंजी और उत्पादक का मुनाफा शामिल होता है। ➢ $GDP_{FC} = GDP_{MP} -$ अप्रत्यक्ष कर + सब्सिडी

1) नाममात्र GDP गणना

नाममात्र GDP $= C + I + G + (X - M)$

2) वास्तविक GDP गणना

वास्तविक GDP $= \frac{\text{नाममात्र GDP}}{\text{अपस्फीतिकारक (डिफ्लेटर)}} \times 100$

3) वास्तविक GDP की वृद्धि दर की गणना

वास्तविक GDP की वृद्धि दर $= \frac{\left(\text{GDP}_{\text{वर्तमान}} - \text{GDP}_{\text{पूर्व}}\right)}{\text{GDP}_{\text{पूर्व}}} \times 100$

टिप्पणी-

C = उपभोग (खपत)

I = निवेश

G = सरकारी व्यय

X = निर्यात

M = आयात

2. <u>शुद्ध घरेलू उत्पाद (NDP)</u>

➢ यह किसी देश की भौगोलिक सीमाओं के अंदर उत्पादित सभी वस्तुओं और सेवाओं का शुद्ध मूल्य होता है ।

- NDP की गणना करने के लिए मशीनरी, मकान और कार जैसी राष्ट्रीय पूंजी परिसंपत्तियों के मूल्यह्रास के मूल्य को GDP से घटाया जाता है ।

शुद्ध घरेलू उत्पाद (NDP) = **सकल घरेलू उत्पाद (**GDP) – **मूल्यह्रास**

- NDP हमेशा GDP से कम होगी ।
- मूल्यह्रास की विभिन्न दरों के कारण NDP का उपयोग वैश्विक स्तर पर नहीं होता है।

3. सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP)

- यह वह कुल मौद्रिक मूल्य है, जो किसी देश के निवासियों द्वारा एक विशिष्ट अवधि के भीतर सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन से प्राप्त होता है, चाहे वह उत्पादन देश के भीतर हो या विदेश में। इसमें विदेश में किए गए निवेश से अर्जित आय को शामिल किया जाता है, लेकिन देश के भीतर विदेशी निवासियों द्वारा किए गए निवेश से होने वाली आय को घटाया जाता है

GNP = GDP + विदेश से प्राप्त निवल आय (NFIA)

4. शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (NNP) (राष्ट्रीय आय)

- यह सकल राष्ट्रीय उत्पाद में से मूल्यह्रास को घटाने के बाद सृजित आय है।
- यह किसी देश की सबसे शुद्ध आय है।

NNP = GNP – मूल्यह्रास

5. प्रति व्यक्ति आय (PCI)

- प्रति व्यक्ति आय या प्रति व्यक्ति उत्पादन लोगों के जीवन स्तर को दर्शाने वाला एक संकेतक है
- एक देश. यह राष्ट्रीय आय को किसी देश की जनसंख्या से विभाजित करके प्राप्त किया जाता है।

प्रति व्यक्ति आय = NNP_{FC}/जनसंख्या

सकल घरेलू उत्पाद (GDP)	GDP = किसी देश के एक वित्तीय वर्ष में उत्पादित सभी वस्तुओं और सेवाओं का कुल योग।
शुद्ध घरेलू उत्पाद (NDP)	NDP = GDP – परिसंपत्तियों पर मूल्यह्रास।
सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP)	GNP = GDP + विदेश से प्राप्त आय।
शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (NNP)	NNP = GNP – परिसंपत्तियों पर मूल्यह्रास। NNP = GDP + विदेश से प्राप्त आय – परिसंपत्तियों पर मूल्यह्रास।

स्थिर मूल्यों पर प्रति व्यक्ति आय की वृद्धि दर वर्ष 1988-89 में सर्वाधिक (7.5%) थी जो वर्ष 2023-24 तक जारी रही।

6. व्यक्तिगत आय (PI)

- व्यक्तिगत आय कुल धन है व्यक्तियों द्वारा प्राप्त आय और किसी देश के घर-परिवार हर संभव तरीके से प्रत्यक्ष करों से पहले के स्रोत।

7. प्रयोज्य आय (DI)

- प्रयोज्य आय का अर्थ वास्तविक आय है जिसे उपभोग पर खर्च किया जा सकता है इस प्रकार, व्यक्तियों और परिवारों।

DI = PI – प्रत्यक्ष कर

भारत में GDP गणना व्यवस्था

- जीडीपी गणना के लिए आधार वर्ष को पिछले आधार वर्ष 2004-05 से परिवर्तित करके 2011-12 कर दिया गया है।

आर्थिक सर्वेक्षण 2023-24

- वर्ष 2023-24 के लिए GDP (प्रचलित कीमतों पर) - 295.36 लाख करोड़ रुपये
- वर्ष 2023-24 के लिए वास्तविक GDP वृद्धि दर - 8.2%
- वर्ष 2023-24 के लिए नाममात्र GDP वृद्धि दर - 9.6%

- GVA (प्रचलित कीमतों पर) में अर्थव्यवस्था के क्षेत्रों का योगदान –
  - ✓ कृषि (17.7%)
  - ✓ उद्योग (27.6%)
  - ✓ सेवाएं (54.7%)

सार्वजनिक वस्तु और निजी वस्तु की अवधारणा

सार्वजनिक वस्तु: सार्वजनिक वस्तुएं वे वस्तुएं हैं जो गैर-बहिष्कृत और गैर-प्रतिद्वंद्वी होती हैं, अर्थात किसी को भी उनके उपयोग से वंचित नहीं किया जा सकता और एक व्यक्ति के उपयोग से दूसरे के लिए उनकी उपलब्धता कम नहीं होती।

उदाहरण: राष्ट्रीय रक्षा, सार्वजनिक उद्यान, स्ट्रीट लाइट।

निजी वस्तु: निजी वस्तुएँ वे वस्तुएँ हैं जो बहिष्कृत और प्रतिस्पर्धी हैं, जिन्हें कुछ लोगों को उपयोग करने से रोका जा सकता है और एक व्यक्ति के उपयोग से दूसरे के लिए उनकी उपलब्धता कम हो जाती है।

उदाहरण: कार, कपड़े।

आर्थिक विकास के मापक

1. मानव विकास सूचकांक (HDI)

मानव विकास सूचकांक (HDI) को 1990 में पाकिस्तानी अर्थशास्त्री महबूब-उल-हक ने भारतीय अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन के साथ मिलकर विकसित किया था। इस सूचकांक का उपयोग संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) द्वारा देशों के विकास स्तर को मापने के लिए किया जाता है।

HDI जन्म के समय जीवन प्रत्याशा, वयस्क साक्षरता दर और जीवन स्तर का एक समग्र सूचकांक है जिसे सकल घरेलू उत्पाद के लघुगणकीय कार्य के रूप में मापा जाता है, जिसे क्रय शक्ति समता (PPP) में समायोजित किया जाता है।

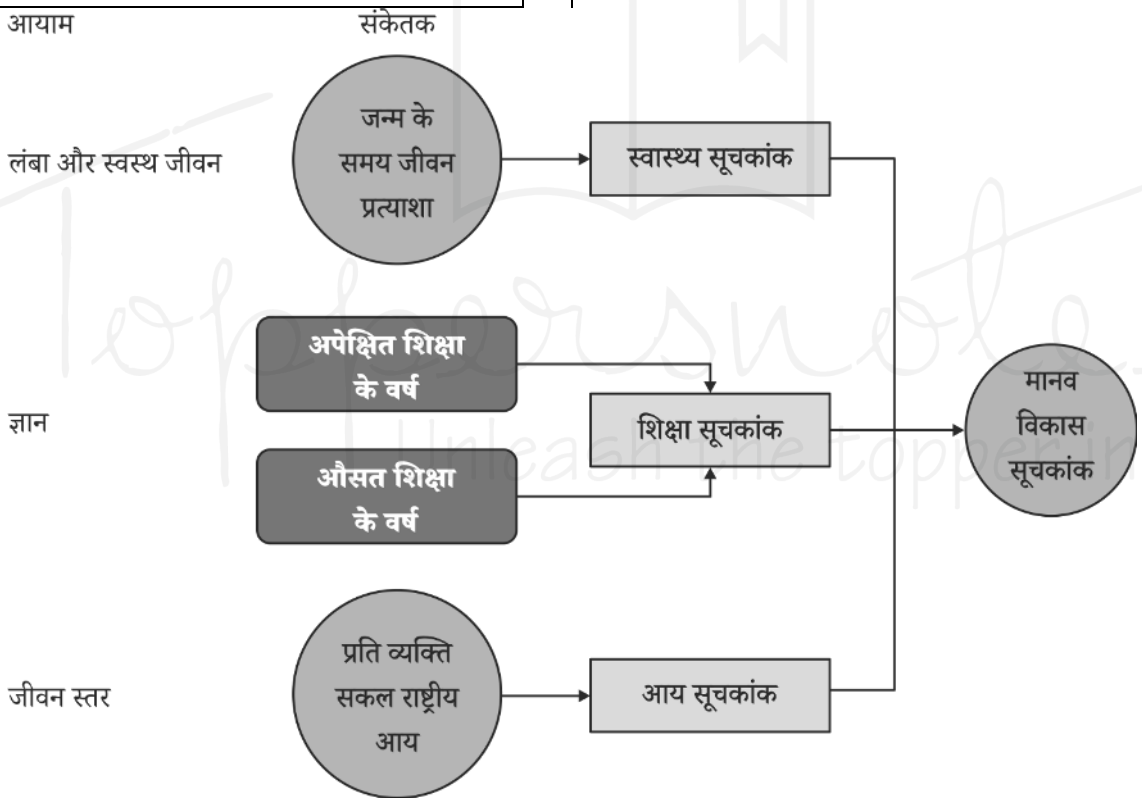

मानव विकास सूचकांक (HDI)- 2023-24

थीम: - "अवरोध को तोड़ना: ध्रुवीकृत विश्व में फिर से सहयोग की कल्पना।"

भारत का विभिन्न सूचकांकों पर प्रदर्शन:

- भारत की रैंक: 134
- HDI स्कोर: 0.644
- भारत में जन्म के समय जीवन प्रत्याशा में थोड़ा सुधार हुआ है, यह 2021 में 67.2 वर्ष थी, जो 2022 में बढ़कर 67.7 वर्ष हो गई है।
- शिक्षा के अपेक्षित वर्षों में कुल 5.88% की वृद्धि हुई है, जो 11.9 वर्षों से बढ़कर 12.6 वर्ष हो गई है।

भारत के पड़ोसी देशों का प्रदर्शन:

- श्रीलंका (78), चीन (75), भूटान (125) और बांग्लादेश (129) स्थान पर हैं।
- नेपाल (146) और पाकिस्तान (164) भारत की अपेक्षा निम्न स्थान पर हैं।
- शीर्ष तीन देश (स्कोर): स्विट्जरलैंड (0.967), नॉर्वे और आइसलैंड।
- सबसे खराब प्रदर्शन: सोमालिया।

2. विश्व प्रसन्नता सूचकांक – 2024

वार्षिक विश्व प्रसन्नता रिपोर्ट गैलप (Gallup), ऑक्सफोर्ड वेलबीइंग रिसर्च सेंटर, यूएन सस्टेनेबल डेवलपमेंट सॉल्यूशंस नेटवर्क (SDSN) और विश्व प्रसन्नता सूचकांक के संपादकीय बोर्ड की साझेदारी से तैयार की जाती है।

- इस रिपोर्ट में छह मुख्य कारकों पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है: सामाजिक समर्थन, आय, स्वास्थ्य, स्वतंत्रता, उदारता और भ्रष्टाचार की अनुपस्थिति।
- यह रिपोर्ट पिछले तीन वर्षों के औसत आंकड़ों (डेटा) के आधार पर एक प्रसन्नता (हैप्पीनेस) स्कोर देती है।

विश्व प्रसन्नता रिपोर्ट 2024 की मुख्य बातें:

- शीर्ष रैंकिंग: फिनलैंड लगातार सातवें वर्ष सूची में प्रथम स्थान पर है।
- सबसे खराब प्रदर्शन: अफगानिस्तान
- भारत की रैंक: 126
- भारत की प्रसन्नता सूचकांक रैंकिंग उसके पड़ोसी देशों जैसे चीन (60), नेपाल (93), पाकिस्तान (108), और म्यांमार (118) से निम्न स्थिति में है।

सकल राष्ट्रीय प्रसन्नता (GNH)

- देश के लोगों की ख़ुशी और खुशहाली का एक पैमाना।
- GNH के चार स्तंभ हैं
  1. सतत और न्यायसंगत सामाजिक-आर्थिक विकास
  2. पर्यावरण संरक्षण
  3. संस्कृति का संरक्षण एवं संवर्धन
  4. सुशासन
- जीएनएच के नौ डोमेन मनोवैज्ञानिक कल्याण, स्वास्थ्य, समय का उपयोग, शिक्षा, सांस्कृतिक विविधता और लचीलापन, सुशासन, सामुदायिक जीवन शक्ति, पारिस्थितिक विविधता और लचीलापन और जीवन स्तर हैं।

3. वैश्विक लैंगिक अंतर रिपोर्ट 2024

- यह रिपोर्ट वर्ष 2006 से विश्व आर्थिक मंच (WEF) द्वारा जारी की जाती है।

वैश्विक लैंगिक अंतर सूचकांक 2024
भारत की रैंक: 129
(कुल देश 146)
प्रथम स्थान: आइसलैंड

- इस रिपोर्ट में 146 देशों में लिंग समानता को चार क्षेत्रों में मापा जाता है:
  - ✓ आर्थिक भागीदारी और अवसर
  - ✓ शैक्षिक उपलब्धि
  - ✓ स्वास्थ्य और उत्तरजीविता
  - ✓ राजनीतिक सशक्तिकरण

बुनियादी शब्दावलियाँ

वित्तीय वर्ष : यह 12 महीने की अवधि होती है जिसका उपयोग सरकारों और व्यवसायों द्वारा अपने लेखांकन और बजट की योजना बनाने के लिए किया जाता हैं, यह कैलेंडर वर्ष से भिन्न भी हो सकती है । उदाहरण के लिए, भारत में वित्तीय वर्ष 1 अप्रैल से शुरू होकर अगले साल के 31 मार्च तक चलता है।

बाज़ार मूल्य: यह वह अंतिम मूल्य है जिस पर कोई उत्पाद बाज़ार में बेचा जाता है। इसमें सभी मध्यवर्ती लागतें, सब्सिडी और कर शामिल होते हैं, जो कीमत को प्रभावित करते हैं।

साधन लागत (Factor Cost): यह किसी वस्तु या सेवा के उत्पादन में उपयोग या उपभोग किए गए सभी संसाधनों और कारकों की कुल लागत है। इसका मतलब उत्पादन में लगे कारक जैसे श्रम, पूंजी, भूमि, प्रबंधन आदि की लागत से है।

आधार वर्ष : यह एक संदर्भ वर्ष होता है जिसका उपयोग समय के साथ आर्थिक और वित्तीय परिवर्तनों, जैसे मुद्रास्फीति GDP, आदि की तुलना करने के लिए किया जाता है। वर्तमान में भारत का आधार वर्ष 2011-12 है।

स्थिर मूल्य : यह आधार वर्ष में प्रचलित कीमत को संदर्भित करता है

मूल्यह्रास: उपयोग, टूट-फूट या अप्रचलन के कारण समय के साथ किसी पूंजीगत परिसंपत्ति के मौद्रिक मूल्य में कमी।

वस्तुएं: यह वे भौतिक/मूर्त उत्पाद हैं जिन्हें छुआ और मापा जा सकता है। इसमें उपभोक्ता सामान (कपड़े, भोजन और इलेक्ट्रॉनिक्स) और पूंजीगत सामान (उत्पादन के लिए उपयोग की जाने वाली मशीनें और उपकरण जैसे कारखाने की मशीनें और वाहन) शामिल हैं।

सेवाएं: सभी अमूर्त गतिविधियाँ या लाभ जो उपभोक्ताओं को प्रदान की जाती हैं। इसमें

- **व्यक्तिगत सेवाएं: जैसे बाल कटाना, स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा**
- **व्यावसायिक सेवाएं: जैसे परामर्श, लेखांकन और कानूनी सेवाएं शामिल हैं।**

वस्तुएं और सेवाएं मिलकर किसी अर्थव्यवस्था के उत्पादन का हिस्सा बनती हैं और ये उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं को पूरा करने और आर्थिक गतिविधियों को आगे बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण होती हैं।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

2 CHAPTER मुद्रा, मुद्रा आपूर्ति और मौद्रिक नीति

मुद्रा वह वस्तु है जिसे विनिमय के माध्यम, खाते की एक इकाई और मूल्य के संग्रह के रूप में व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है। यह मूल्य के मानक और भुगतान के साधन के रूप में कार्य करके आर्थिक लेनदेन की सुविधा प्रदान करता है।

मुद्रा आपूर्ति

- मुद्रा आपूर्ति का तात्पर्य किसी विशेष समय पर किसी अर्थव्यवस्था में उपलब्ध कुल धन राशि से है। यह किसी अर्थव्यवस्था में किसी भी समय जनता द्वारा विभिन्न रूपों में रखे गए धन की कुल मात्रा को संदर्भित करता है। मुद्रा आपूर्ति के मुख्य घटक जनता द्वारा रखी गई मुद्रा और वाणिज्यिक बैंकों द्वारा रखी गई शुद्ध-मांग जमा हैं।
- मुद्रा आपूर्ति आर्थिक गतिविधियों, मुद्रास्फीति और ब्याज दरों को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
- भारतीय अर्थव्यवस्था में मुद्रा आपूर्ति को सामान्यतः निम्नलिखित रूपों में मापा जाता है-

मौद्रिक समुच्चय	अवयव
M1	जनता के पास रखी मुद्रा + वाणिज्यिक बैंकों में मांग जमाएँ + RBI के पास अन्य जमाएँ
M2	M1 + डाकघरों की बचत बैंकों में रखी मांग जमाएँ
M3	M1 + वाणिज्यिक बैंकों में रखी शुद्ध सावधि जमाएँ
M4	जनता के पास रखी मुद्रा + वाणिज्यिक बैंकों और डाकघर बचत बैंकों में रखी मांग और सावधि जमाएँ

- M1 और M2 को संकीर्ण मुद्रा (Narrow Money) तथा M3 और M4 को व्यापक मुद्रा (Broad Money) कहा जाता है।
- M1 सबसे अधिक तरल है जबकि M4 सबसे कम तरल है।
- M3, जिसे समग्र मुद्रा आपूर्ति भी कहा जाता है तथा यह मुद्रा आपूर्ति के लिए सबसे अधिक उपयोग किया जाने वाला उपाय है। RBI मौद्रिक नीति तैयार करते समय मुख्य रूप से इस समुच्चय पर ध्यान केंद्रित करती है।

मुद्रा समुच्चयों को समझने से पहले, हमें इनसे संबंधित कुछ महत्वपूर्ण शब्दावली को समझना आवश्यक है:

- **M_0 (उच्च शक्तिशाली मुद्रा): सामान्यतया आरबीआई की कुल देनदारी को उच्च शक्ति वाली मुद्रा कहा जाता है।** इसमें प्रचलन में मौजूद भौतिक मुद्रा (सिक्के और नोट) और वाणिज्यिक बैंकों द्वारा केंद्रीय बैंक के पास अपने खातों में रखे गए भण्डार शामिल है। अर्थव्यवस्था में कुल मुद्रा आपूर्ति उच्च-शक्ति मुद्रा की मात्रा से अधिक होती है क्योंकि वाणिज्यिक बैंक अपनी जमा राशि का कुछ हिस्सा उधार देकर अतिरिक्त धन बनाते हैं।
- **मांग जमा/डिमांड डिपॉजिट:** बैंक खातों में जमा वह धन जिसे प्रायः चेक या डेबिट कार्ड के माध्यम से मांग पर उपलब्ध कराया जाता है। यह तरल होता है तथा इसे कभी भी निकाला जा सकता है। **उदाहरण:** यदि किसी चेकिंग खाते में ₹50,000 जमा हैं, तो यह एक मांग जमा है, क्योंकि इसे जब चाहें निकाला या खर्च किया जा सकता है।
- **सावधि जमा:** ये ऐसे बचत खाते हैं जिनमें एक निश्चित अवधि के लिए धन जमा किया जाता है और अवधि समाप्त होने तक बिना किसी जुर्माने के इसे निकाला नहीं जा सकता। उदाहरण : Fixed Deposits

मौद्रिक नीति

- मौद्रिक नीति एक ऐसी प्रक्रिया है जिसे केंद्रीय बैंक द्वारा लागू किया जाता है ताकि मुद्रा आपूर्ति का प्रबंधन करके विशेष लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके, जैसे मुद्रास्फीति को नियंत्रित करना, उचित विनिमय दर बनाए रखना, रोजगार के अवसर सृजित करना, और आर्थिक विकास को बढ़ावा देना।
- इसमें खुले बाजार परिचालन, आरक्षित आवश्यकताओं या विदेशी मुद्रा व्यापार के माध्यम से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से ब्याज दरों में परिवर्तन करना शामिल है।
- मौद्रिक नीति विस्तारवादी या संकुचनकारी हो सकती है।

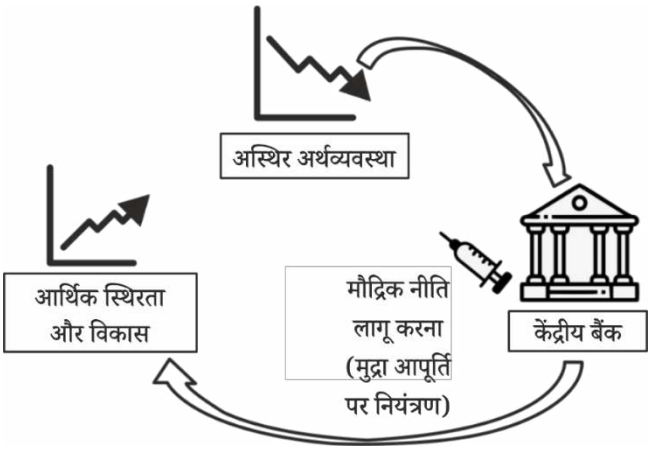

मौद्रिक नीति के प्रकार

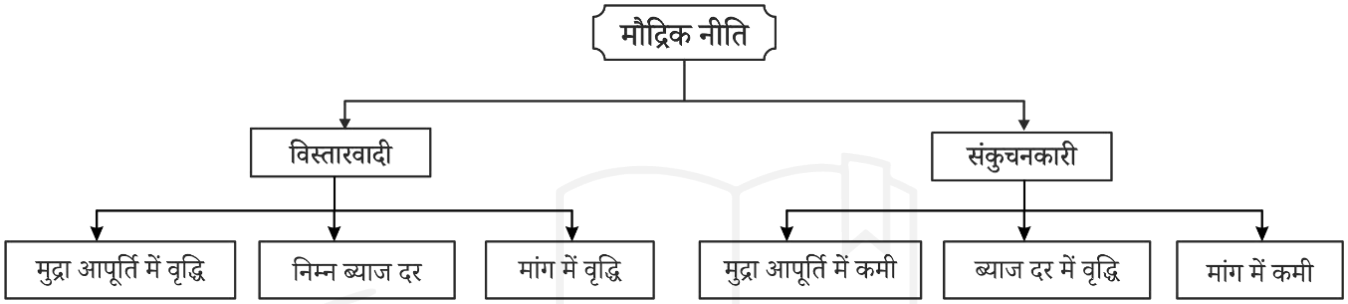

विस्तारवादी मौद्रिक नीति	संकुचनकारी मौद्रिक नीति
➢ लक्ष्य: अर्थव्यवस्था में मुद्रा आपूर्ति बढ़ाना। ➢ उपाय: प्रमुख ब्याज दरों में कटौती करके बाजार में तरलता बढ़ाना। ➢ यह नीति आमतौर पर मंदी के समय लागू की जाती है ताकि मुद्रा आपूर्ति बढ़े जिससे खपत को बढ़ावा मिले और मांग उत्पन्न हो सके। (राजकोषीय प्रोत्साहन) ➢ अन्य नाम: डोविश (Dovish) मौद्रिक नीति उदाहरण: मार्च, 2020 में देश में COVID-19 स्थिति के कारण।	➢ लक्ष्य: अर्थव्यवस्था में मुद्रा आपूर्ति घटाना। ➢ उपाय: प्रमुख ब्याज दरों में वृद्धि करके बाजार में तरलता कम करना। ➢ यह नीति मुद्रास्फीति की स्थिति में लागू की जाती है ताकि मुद्रा आपूर्ति घटे जिससे खपत कम हो और मांग नियंत्रित की जा सके। ➢ अन्य नाम: हॉकीश (Hawkish) मौद्रिक नीति

RBI और मौद्रिक नीति

- भारतीय रिज़र्व बैंक अधिनियम, 1934 के अनुसार, भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) को मौद्रिक नीति लागू करने का विशेष अधिकार प्राप्त है।
- हाल के वर्षों में भारत की मौद्रिक नीति के निर्माण में कई महत्वपूर्ण बदलाव हुए हैं, जिनमें मौद्रिक नीति ढांचा (MPF), मौद्रिक नीति समिति MPC) और मौद्रिक नीति प्रक्रिया (MPP) का समावेश शामिल है।

मौद्रिक नीति ढांचा (MPF)

मई 2016 में, केंद्रीय बैंक को देश की मौद्रिक नीति के प्रबंधन के लिए विधायी शक्ति देने के लिए आरबीआई अधिनियम में संशोधन किया गया । यह ढांचा वर्तमान आर्थिक स्थितियों के आधार पर नीति (रेपो दर) निर्धारित करने और मुद्रा बाजार दरों को रेपो दर के करीब रखने हेतु तरलता को समायोजित करने पर केंद्रित है। रेपो दर में परिवर्तन मुद्रा बाजार के माध्यम से संपूर्ण वित्तीय प्रणाली को प्रभावित करता है, जिससे कुल मांग प्रभावित होती है, जो मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण है।

मौद्रिक नीति समिति (MPC)

- MPC छह सदस्यीय समिति है, जिसे केंद्रीय सरकार द्वारा नियुक्त किया जाता है।
- यह समिति भारत में मुद्रास्फीति के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक नीतिगत ब्याज दर निर्धारित करती है।
- इस समिति का गठन रघुराम राजन द्वारा किया गया था।
- MPC को वर्ष में कम से कम चार बार बैठक करनी होती है। गणपूर्ति के लिए चार सदस्यों की उपस्थिति आवश्यक है।
- प्रत्येक सदस्य का एक वोट होता है, और यदि वोट बराबर हो जाए, तो गवर्नर को निर्णायक वोट (casting vote) का अधिकार होता है।
- प्रत्येक MPC बैठक के समापन पश्चात्, अपनाए गए संकल्प को प्रकाशित किया जाता है।

नोट: मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण

- 2016 में अपनाई गई इस नीति के तहत भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने ±2% की सहनशीलता बैंड के साथ मुद्रास्फीति का लक्ष्य 4% निर्धारित किया है।
- यह नीति RBI को आर्थिक परिस्थितियों, जैसे विकास और मुद्रास्फीति के रुझानों के आधार पर अपनी मौद्रिक नीति में आवश्यकतानुसार बदलाव करने की अनुमति देती है।

मौद्रिक नीति समिति, 2016

- स्थापना: 2016
- अनुशंसित: उर्जित पटेल समिति ,2015 द्वारा
- उद्देश्य: मौद्रिक नीति के निर्णयों में पारदर्शिता और जवाबदेही लाना।
- कार्य: मुद्रास्फीति के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक नीतिगत ब्याज दर निर्धारित करना।
- मुद्रास्फीति लक्ष्य: प्रति पांच वर्ष में एक बार तय किया जाता है।
  - ✓ भारत सरकार, भारतीय रिजर्व बैंक के परामर्श से इसे तय करती है।
  - ✓ RBI की मुद्रा और वित्त रिपोर्ट (RCF) 2020-21 के अनुसार, वर्तमान मुद्रास्फीति लक्ष्य बैंड (4% ± 2%) अगले पांच वर्षों (2020-2025) के लिए उपयुक्त माना गया है।

आयाम	विवरण
संरचना	➢ सदस्य: 6 सदस्य (3 RBI से और 3 भारत सरकार से) ➢ अध्यक्ष: RBI गवर्नर (श्री शक्तिकान्त दास) ➢ उपाध्यक्ष: RBI के डिप्टी गवर्नर (डॉ. एम.डी. पात्र) ➢ सदस्य : राम सिंह, सौगत भट्टाचार्य और , नागेश कुमार, राजीव रंजन

मौद्रिक नीति के उपकरण

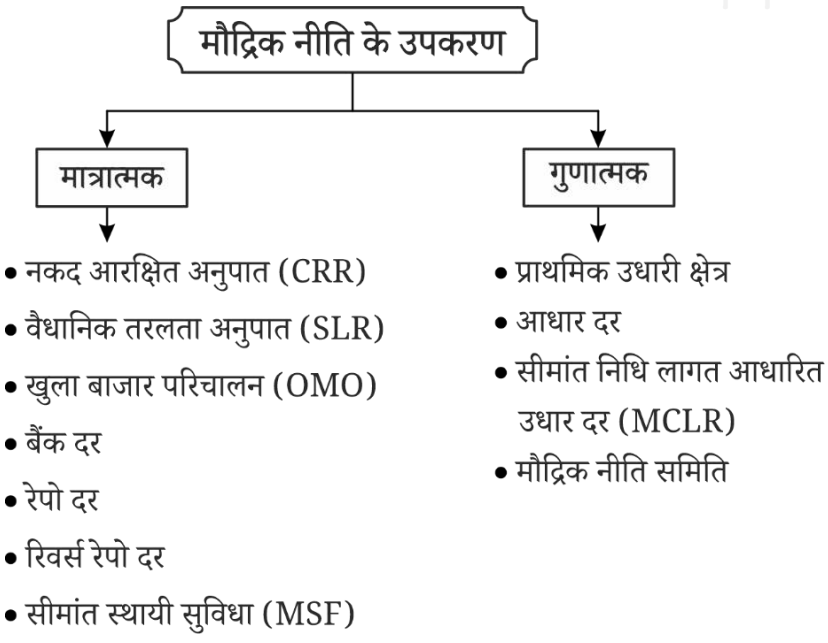

Unleash the topper in you

1. मात्रात्मक उपकरण

उपकरण	विवरण
नकद आरक्षित अनुपात (CRR)	➢ इसे मौद्रिक नीति समिति द्वारा निर्धारित किया जाता है। ➢ बैंकों को अपनी शुद्ध मांग और सावधि देयताओं (NDTL) का एक निश्चित प्रतिशत, रिजर्व बैंक के पास जमा करना होता है। ➢ ब्याज: RBI के पास जमा धन पर बैंकों को कोई ब्याज नहीं मिलता है। ➢ वर्तमान स्थिति: 4.50% (अप्रैल 2024) **Net Demand and time liability (NDTL):** बैंक के पास कुल जमा की गणना सावधि जमा के साथ चालू/बचत जमा को जोड़कर की जाती है **आरक्षित अनुपात = CRR + SLR**
वैधानिक तरलता अनुपात (SLR)	➢ बैंकों को अपनी जमा राशि का एक निश्चित प्रतिशत अत्यधिक तरल सरकारी प्रतिभूतियों (सोना, नकद या सरकारी प्रतिभूतियों) के रूप में रखना होता है। ➢ इसे सरकारी प्रतिभूति के रूप में रखा जाता है। ➢ यह सुरक्षा राशि होती है, जिस पर बैंक को RBI से ब्याज मिलता है। ➢ वर्तमान स्थिति: 18% (अप्रैल 2024)
खुला बाजार परिचालन (OMO)	➢ बाजार में मुद्रा आपूर्ति को नियंत्रित करने के लिए RBI द्वारा सरकारी प्रतिभूतियों का क्रय/विक्रय। **सरकारी प्रतिभूतियाँ (G-Sec)** प्रतिभूति की परिपक्वता पर निवेशित मूलधन के पूर्ण पुनर्भुगतान का वादा। इस प्रकार सरकार विभिन्न स्रोतों से धन प्राप्त करती है। ➢ G-Sec विक्रय: बाजार में मुद्रा आपूर्ति कम होती है। ✓ RBI मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के लिए प्रतिभूतियाँ बेचती है। ➢ G-Sec क्रय**:** बाजार में मुद्रा आपूर्ति बढ़ती है । ✓ RBI अर्थव्यस्था में तरलता प्रवाहित करके अपस्फीति को नियंत्रित करने के लिए प्रतिभूतियां खरीदता है
बैंक दर	➢ वह दर जिस पर वाणिज्यिक बैंक आरबीआई से पैसा उधार लेते हैं। ➢ RBI ने बैंक दर को रेपो दर से 0.25% अधिक निर्धारित किया है। ➢ इसे रेपो दर से बेहतर साधन माना जाता है क्योंकि यह दीर्घकालिक है। ➢ वर्तमान स्थिति: 6.75% (अप्रैल 2024)
सीमांत स्थायी सुविधा (MSF)	➢ 2011 में शुरू किया गया । ➢ यह एक रातों – रात ऋण सुविधा है , 1 दिन के लिए बैंक **RBI** से उधार ले सकते हे। ➢ आपातकालीन स्थिति जब अंतर-बैंक तरलता पूरी तरह से समाप्त हो जाती है**,** उस स्थिति में वाणिज्यिक बैंकों के लिए **RBI** से उधार लेने की सुविधा । ➢ इसके तहत **SLR** की सरकारी प्रतिभूतियो को गिरवी रखा जा सकता है **।** ➢ इसकी दर हमेशा रेपो दर से अधिक निर्धारित की जाती है। ➢ वर्तमान स्थिति: 6.75% (अप्रैल 2024)
स्थायी जमा सुविधा (**SDF**)	**SDF** एक सुविधा है जिसके तहत अधिशेष तरलता सोखने के लिये किसी भी प्रकार की जमानत (**Collateral**) की आवश्यकता नहीं होती है **।**

तरलता समायोजन सुविधा (LAF)	
रेपो दर	➢ वह दर जिस पर RBI वाणिज्यिक बैंकों को उनकी अल्पकालिक (90 दिनों तक) तरलता आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए ऋण देती है ✓ बाद में उन्हीं सरकारी परिसंपत्तियों को पुनः खरीदती है। ➢ वर्तमान स्थिति: 6.50% (अप्रैल 2024) ➢ यह दर दो प्रकार की होती है : ✓ ओवरनाइट रेपो: 24 घंटे के लिए उधार लिया जाता है ✓ टर्म रेपो: 7,14,21 आदि दिनों के लिए उधार लिया जाता है
रिवर्स रेपो दर	➢ इस दर के तहत RBI रातों-रात बैंकों से तरलता को अवशोषित करती है ✓ इसका उपयोग LAF के अंतर्गत संपार्श्विक के रूप में रखी गई योग्य सरकारी प्रतिभूतियों के बदले में किया जाता है । ➢ इसकी दर रेपो दर से कम होती है । ➢ वर्तमान स्थिति: 3.35% (अप्रैल 2024)

गुणात्मक उपकरण

गुणात्मक उपकरण (जैसे कि प्राथमिक क्षेत्र ऋण (PSL) और ऋण-से-मूल्य (LTV) अनुपात) अर्थव्यवस्था के विशिष्ट क्षेत्रों के ऋण आवंटन को विनियमित करते हैं। मात्रात्मक उपकरणोंके विपरीत जो, ऋणों की समग्र मात्रा का प्रबंधन करते है गुणात्मक उपकरण इस बात पर ध्यान केंद्रित करते हैं कि ऋण किस प्रकार से वितरित हो रहा है।

उपकरण	विवरण
मार्जिन आवश्यकताएँ/ ऋण-से-मूल्य (Loan to Value)	➢ मार्जिन का तात्पर्य ऋणों के लिए दी गई प्रतिभूतियों के मूल्य और वास्तव में दिए गए ऋणों के मूल्य के बीच अंतर से है। उदाहरण: यदि गिरवी रखी गई संपत्ति का मूल्य ₹1 लाख है और LTV 80% है, तो अधिकतम ₹80,000 ही ऋण के रूप में दिया जा सकता है। ➢ RBI मांग को बढ़ाने या कम करने के लिए इस प्रतिशत को बदल सकती है।
	➢ यदि आरबीआई किसी विशेष क्षेत्र में ऋण के प्रवाह को नियंत्रित करना चाहता है, तो वह उस क्षेत्र के लिए उच्च मार्जिन तय करता है। परिणामस्वरूप, ग्राहक उस क्षेत्र के लिए कम ऋण लेंगे।
उपभोक्ता ऋण विनियमन (Consumer Credit Regulation)	➢ उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं की खरीद के लिए वाणिज्यिक बैंकों द्वारा उपलब्ध कराया गया ऋण (किस्तों में) उपभोक्ता ऋण के रूप में जाना जाता है। ➢ यदि कुछ उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं की अतिरिक्त मांग होती है जिसके कारण उनकी कीमतें ऊंची हो जाती हैं, तो आरबीआई निम्लिखित उपाय द्वारा उपभोक्ता ऋण को कम कर देता है: 1. डाउन पेमेंट बढ़ा कर, और/या 2. ऐसे क्रेडिट के पुनर्भुगतान की किस्तों की संख्या कम कर।

प्राथमिक उधारी क्षेत्र	➢ RBI यह सुनिश्चित करता है कि बैंक अपनी निधियों का एक निश्चित हिस्सा कुछ विशेष क्षेत्रों में आवंटित करें। ➢ उदाहरण: कृषि, सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (MSME), निर्यात ऋण, शिक्षा, आवास, सामाजिक बुनियादी ढांचा, तथा नवीकरणीय ऊर्जा आदि।
नैतिक अनुनय	➢ RBI निर्देश जारी करता है, बैठकें करता है, अनुनय और दबाव का उपयोग करता है, निरीक्षण करता है, और नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए नियमित रूप से अनुवर्ती कार्रवाई करता है।
प्रत्यक्ष कार्रवाई	जब कोई वाणिज्यिक बैंक आरबीआई के साथ सहयोग नहीं करता है तो RBI सीधी कार्रवाई करता है जैसे:
	➢ जुर्माना लगाना ➢ असहयोगी बैंकों पर प्रतिबंध लगाना ➢ अपने बिलों में पुनः छूट देने से इंकार करना ➢ ऋण आपूर्ति से वंचित करना
साख राशनिंग	इसके तहत ऋणों को विभिन्न क्षेत्रो में बाँटा जाता है। (1) महंगाई अधिक →उपभोक्ताओ को ऋण कम दिए जाते हे, निवेशको को अधिक ऋण (2) मंदी की स्थिति → उपभोक्ताओं को अधिक ऋण।

आधार दर

➢ यह वह न्यूनतम दर है जिसके नीचे बैंक उपभोक्ताओं को ऋण नहीं दे सकते।

सीमांत निधि लागत आधारित उधार दर (MCLR)

➢ यह वह न्यूनतम ब्याज दर है जिस पर बैंक ऋण देते हैं। यह आंतरिक रूप से निर्धारित बेंचमार्क दर है, जो शेष ऋण पुनर्भुगतान अवधि के आधार पर तय होती है।

उपकरणों और मुद्रास्फीति के मध्य संबंध

उपकरण	मुद्रास्फीति के समय	अपस्फीति के समय
आरक्षित अनुपात (CRR, SLR)	बढ़ाएँ	घटाएं
खुला बाजार परिचालन (OMO)	RBI द्वारा नकदी/तरलता जुटाने के लिए प्रतिभूतियां को बेचना	RBI द्वारा बाजार में नकदी की आपूर्ति के लिए प्रतिभूतियां खरीदना
बैंक दर	बढाएं	घटाएं
रेपो दर	बढाएं	घटाएं
रिवर्स रेपो दर	इसका मूल्य रेपो के साथ जुड़ा हुआ है, इसलिए इसे स्वतंत्र रूप से बढ़ाया/घटाया नहीं जा सकता है।	
सीमांत स्थायी सुविधा (MSF)	इसका मूल्य रेपो से जुड़ा हुआ है, इसलिए इसे स्वतंत्र रूप से बदला नहीं जा सकता। इसके अलावा MSF = अस्थायी अग्निशमन, नकदी कुप्रबंधन।	

RBI द्वारा नीतिगत रुख

RBI के विभिन्न नीतिगत रुख	
समायोजक (Accommodative)	➢ केंद्रीय बैंक आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए मुद्रा आपूर्ति को बढ़ाता है। ➢ इसमें ब्याज दरों में कटौती की जाती है, लेकिन दरों में वृद्धि की संभावना नहीं होती है । ➢ यह तब अपनाया जाता है जब वृद्धि को नीति समर्थन की आवश्यकता होती है और मुद्रास्फीति तत्काल चिंता का विषय नहीं होती।
तटस्थ (Neutral)	➢ केंद्रीय बैंक व्यापक आर्थिक स्थितियों के आधार पर ब्याज दरों को कम या बढ़ा सकता है।
आक्रामक (हॉकिश)	➢ इस रुख में केंद्रीय बैंक की प्राथमिकता मुद्रास्फीति को कम रखना होता है। ➢ बैंक मुद्रा आपूर्ति को कम करने के लिए ब्याज दरों में वृद्धि कर सकती है, जिससे मांग को नियंत्रित किया जा सकता है। ➢ यह सख्त मौद्रिक नीति का संकेत देती है।
अंशांकित (कैलिब्रेटेड) कसावट	➢ दर में वृद्धि एक सुनियोजित तरीके से की जाती है। ➢ बैंक हर बार दरों में वृद्धि नहीं करता, लेकिन बढ़ोतरी की प्रवृत्ति रहती है।

नोट: मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण

- 2016 में अपनाई गई इस नीति के तहत भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने ±2% की सहनशीलता बैंड के साथ मुद्रास्फीति का लक्ष्य 4% निर्धारित किया है।
- यह नीति RBI को आर्थिक परिस्थितियों, जैसे विकास और मुद्रास्फीति के रुझानों के आधार पर अपनी मौद्रिक नीति में आवश्यकतानुसार बदलाव करने की अनुमति देती है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

3 CHAPTER मुद्रास्फीति

मुद्रास्फीति

मुद्रास्फीति वह स्थिति है जिसमें वस्तुओं और सेवाओं की सामान्य कीमतें लगातार बढ़ती रहती हैं। इसके परिणामस्वरूप, मुद्रा की क्रय शक्ति में गिरावट होती है। मुद्रास्फीति एक व्यापक आर्थिक घटना है और इसका संबंध विशेष वस्तुओं या वस्तुओं के एक छोटे समूह की कीमत में वृद्धि से नहीं होता। मुद्रास्फीति से कीमत स्तर में बढ़ोत्तरी होती है परिणामस्वरूप आय के समान स्तर के बावजूद एक परिवार पहले की तुलना में कम मात्रा में वस्तुओं का उपभोग कर पाता है।

उदाहरण के लिए - एक परिवार की मासिक आय ₹100 है और वह एक वस्तु A खरीदता है जिसकी कीमत ₹4 है, जिससे उन्हें 25 इकाइयाँ खरीदने की अनुमति मिलती है। यदि वस्तु A की कीमत ₹5 तक बढ़ जाती है, तो वे उसी ₹100 के साथ केवल 20 इकाइयाँ खरीद सकते हैं। इससे पता चलता है कि मुद्रास्फीति उनकी क्रय शक्ति को कम कर देती है, जिसका अर्थ है कि वे समान धनराशि से कम खरीदारी कर सकते हैं।

मुद्रास्फीति के प्रकार

1. **मध्यम मुद्रास्फीति (Moderate Inflation)** - जब सामान्य कीमत स्तर धीरे-धीरे लेकिन निरंतर रूप से बढ़ता है, तो इसे मध्यम मुद्रास्फीति कहते हैं।
2. **तीव्र मुद्रास्फीति (Galloping Inflation)** - जब सामान्य कीमत स्तर में तेज़ी से और उच्च दर पर वृद्धि होती है तो इसे तीव्र मुद्रास्फीति कहते है। इसमें मुद्रास्फीति की दर दो अंकों या कभी-कभी तीन अंकों तक पहुँच जाती है। उदाहरण के लिए, 1970 के दशक में लैटिन अमेरिकी देशों में मुद्रास्फीति की दर 100 प्रतिशत से अधिक थी।
3. **अति-मुद्रास्फीति (Hyperinflation)** - जब मुद्रास्फीति की दर बहुत अधिक हो जाती है। उदाहरण के लिए, वर्ष 2008-09 के दौरान जिम्बाब्वे में कीमतें लगभग हर दिन दोगुनी हो गई और और मुद्रा का कार्य जैसे 'मूल्य संग्रह' और 'विनिमय का माध्यम' के रूप में इसकी उपयोगिता समाप्त हो गई थी।
4. **रुद्ध मुद्रास्फीति (Stagflation)** - जब मुद्रास्फीति में बहुत धीरे या शून्य दर से वृद्धि होती है (स्थिर) लेकिन कीमतें बढ़ती रहती हैं। इस मुद्रास्फीति के दुष्प्रभावों में मुद्रास्फीति के साथ बेरोजगारी में वृद्धि शामिल है। यह 1970 के दशक में हुआ था, जब कच्चे तेल की कीमतें तेजी से बढ़ीं और विकसित देशों में तीव्र मुद्रास्फीति उत्पन्न हुई।
5. **असमान मुद्रास्फीति (Skewflation)** - जब विभिन्न क्षेत्रों में कीमतें असमान रूप से बढ़ती हैं, जिससे कुछ क्षेत्रों में मुद्रास्फीति होती है जबकि अन्य क्षेत्रों में स्थिरता या गिरावट रहती है।
6. **अपस्फीति (Deflation)** - जब मूल्य स्तर में लगातार गिरावट होती है।

मूलभूत मुद्रास्फीति बनाम हेडलाइन मुद्रास्फीति

मूलभूत मुद्रास्फीति (Core Inflation)	हेडलाइन मुद्रास्फीति (Headline Inflation)
➢ इसमें भोजन और ऊर्जा जैसी वस्तुएं मुद्रास्फीति के आकलन में शामिल नहीं की जाती हैं क्योंकि इनकी कीमतें काफी अस्थिर होती हैं। ➢ उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI): इसका उपयोग मुद्रास्फीति को मापने के लिए सर्वाधिक रूप से होता है। यह दीर्घकालिक मुद्रास्फीति की प्रवृत्ति का मापन करता है।	➢ इसमें भोजन और ऊर्जा (जैसे तेल और गैस) की कीमतें कुल मुद्रास्फीति के इस आकलन में शामिल होती हैं। जो अधिक अस्थिर और मुद्रास्फीति की वृद्धि के लिए प्रवण होती हैं। ➢ हेडलाइन मुद्रास्फीति किसी अर्थव्यवस्था की वास्तविक मुद्रास्फीति प्रवृत्ति को सटीक रूप से प्रतिबिंबित नहीं कर सकती।

मुद्रास्फीति के कारण

मांग-जनितमुद्रास्फीति	➢ ऐसे कारक जो कुल मांग में वृद्धि करते हैं जबकि समग्र आपूर्ति में कोई वृद्धि नहीं होती, मांग-जनित मुद्रास्फीति का कारण बन सकते हैं।	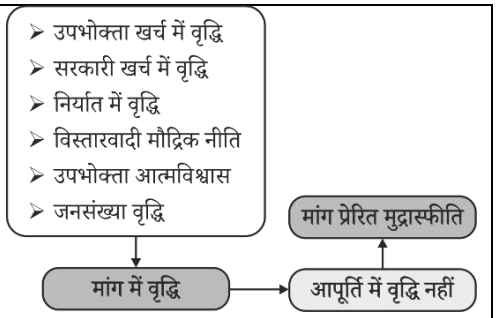
लागत- प्रेरित मुद्रास्फीति	➢ श्रम, कच्चे माल, परिवहन और अन्य इनपुट लागत में वृद्धि, जो आपूर्ति पक्ष के कारक हैं, लागत-प्रेरित मुद्रास्फीति (Cost-push Inflation) का कारण बनती है। ➢ इसे मजदूरी प्रेरित मुद्रास्फीति (Wage-push Inflation) भी कहा जाता है क्योंकि उत्पादन की कुल लागत में मजदूरी का महत्वपूर्ण योगदान होता है। ➢ उदाहरण के लिए, 1970 के दशक में तेल की कीमतों में तेजी, लागत-प्रेरित मुद्रास्फीति थी क्योंकि इससे उत्पादन लागत बढ़ गई थी।	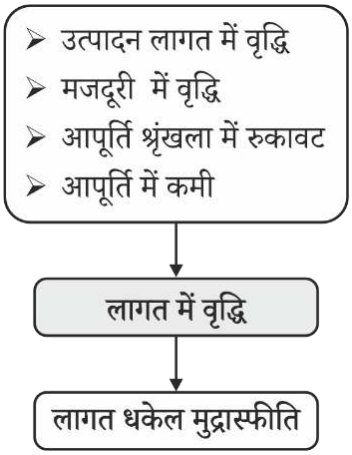
मौद्रिक मुद्रास्फीति	➢ किसी देश की मुद्रा आपूर्ति में लगातार वृद्धि के कारण उत्पन्न मुद्रास्फीति को मौद्रिक मुद्रास्फीति कहा जाता है। ➢ जब रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (RBI) अधिक मुद्रा जारी करता है (घाटे की वित्तपोषण), तो इससे मौद्रिक मुद्रास्फीति होती है।	
संरचनात्मक मुद्रास्फीति (बॉटलनेक मुद्रास्फीति)	➢ संरचनात्मक बाधाओं, जैसे संसाधन अंतर (जैसे कि बचत निवेश से कम होना), खाद्य की कमी (जो वर्षा आधारित कृषि से उत्पन्न होती है), विदेशी मुद्रा की कमी और कमजोर बुनियादी ढांचे के कारण होने वाली मुद्रास्फीति को संरचनात्मक मुद्रास्फीति (Structural Inflation) कहा जाता है। ➢ इस प्रकार की मुद्रास्फीति आमतौर पर विकासशील देशों में अधिक पाई जाती है।	
अंतर्निहित मुद्रास्फीति	➢ अंतर्निहित मुद्रास्फीति तब होती है जब लोग उम्मीद करते हैं कि कीमतें बढ़ती रहेंगी, जिससे वस्तुओं और सेवाओं की कीमतों में वृद्धि होती रहती है। यह आमतौर पर तब होता है जब मजदूरी बढ़ती है, और व्यवसाय इन बढ़ी हुई लागतों को ग्राहकों पर स्थानांतरित कर देते हैं, जिससे कीमतें और बढ़ जाती हैं।	

मुद्रास्फीति का मापन

मुद्रास्फीति को तीन स्तरों पर मापा जा सकता है – उत्पादक, थोक व्यापारी, और खुदरा व्यापारी (उपभोक्ता)। जब उपभोक्ता तक वस्तु पहुँचती है, तो सामान्यतः प्रत्येक स्तर पर उसकी कीमतों में वृद्धि होती है।

1. उत्पादक स्तर पर मापन: उत्पादक मूल्य सूचकांक (PPI)

- उत्पादक मूल्य सूचकांक (PPI) उत्पादक स्तर पर वस्तुओं और सेवाओं की कीमतों में समग्र परिवर्तन को दर्शाता है। (यह उत्पादन स्तर पर मुद्रास्फीति को मापता है)।
- भारत में अभी तक उत्पादक मूल्य सूचकांक का उपयोग नहीं हुआ है, लेकिन नीति आयोग ने इसे जल्दी ही लागू करने की योजना तैयार की है।

2. थोक व्यापारी स्तर पर मापन: थोक मूल्य सूचकांक (Wholesale Price Index - WPI)

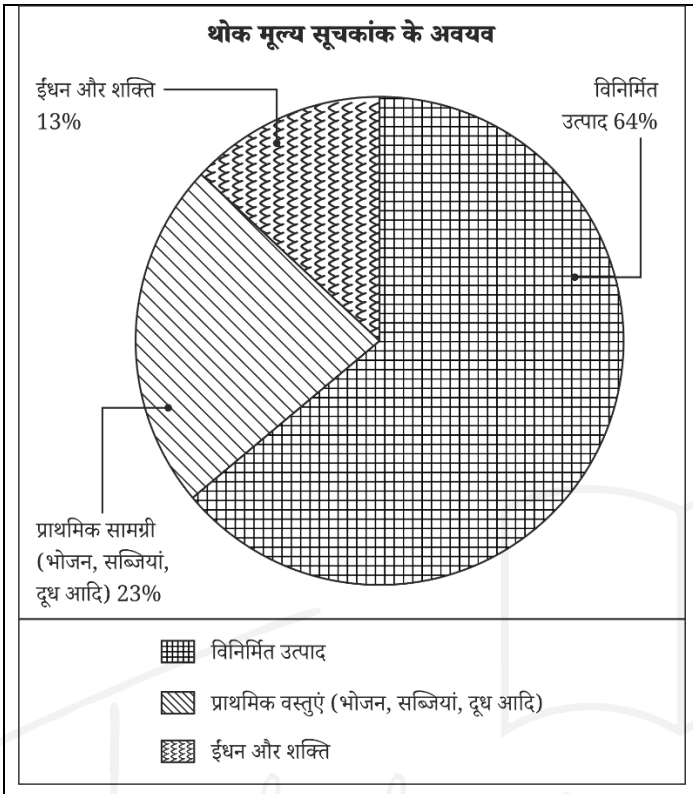

- WPI थोक वस्तुओं के एक प्रतिनिधि बास्केट की कीमत को दर्शाता है। यह सूचकांक सामान्य मूल्य स्तर में होने वाले बदलाव को दर्शाता है।
- WPI का वर्तमान आधार वर्ष 2011-12 है।
- यह केवल वस्तुओं को कवर करता है।
- विनिर्मित उत्पाद (64%) > प्राथमिक सामग्री (23%) > ईंधन और शक्ति (13%)।
  - ✓ इसे आर्थिक सलाहकार कार्यालय (OEA), वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय द्वारा प्रकाशित किया जाता है।
- WPI में अप्रत्यक्ष कर नही जोडे जाते
- WPI बास्केट में कुल 697 वस्तुएँ शामिल हैं।

3. खुदरा/उपभोक्ता स्तर पर मापन: उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (Consumer Price Index - CPI)

- उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI) खुदरा स्तर पर कीमतों में औसत बदलाव को मापता है।

$$\text{उपभोक्ता मूल्य सूचकांक} = \frac{\text{किसी निश्चित वर्ष में बाजार बास्केट की लागत}}{\text{आधार वर्ष में बाजार बास्केट की लागत}} \times 100\%$$

- इसे निर्वाह लागत सूचकांक (Cost of Living Index) भी कहा जाता है।
- यह उपभोक्ता स्तर पर मूल्य उतार-चढ़ाव को मापता है।
- इसका वर्तमान आधार वर्ष 2012 है।
- जब से RBI ने मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण की शुरुआत की है, तब से CPI (संशोधित) को भारत में मौद्रिक नीति के कार्यान्वयन के लिए एक मानक आधार के रूप में उपयोग किया जाता है।
- मौद्रिक नीति समिति के अनुसार, CPI (संशोधित) को 2% से 6% के बीच बनाए रखना आवश्यक है।
- यदि बैंक दर को कम किया जाता है तो CPI में वृद्धि होती है।

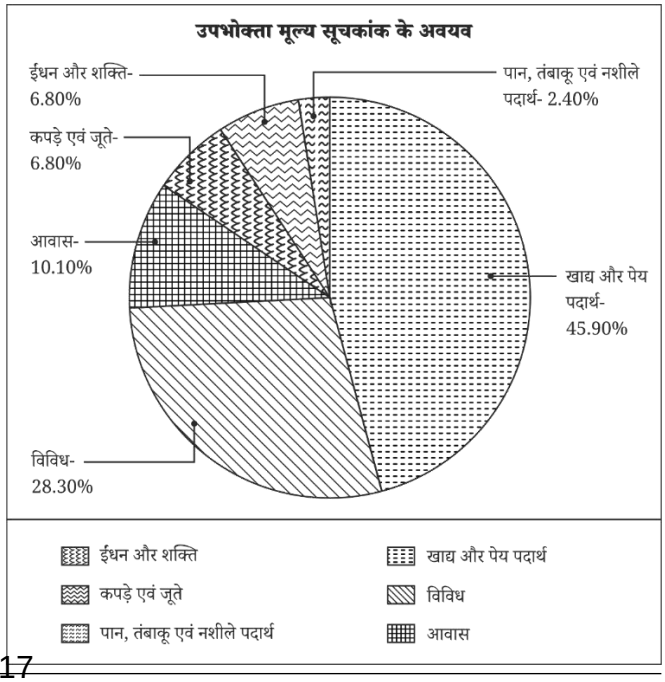

उपभोक्ता मूल्य सूचकांक के प्रकार-

CPI के प्रकार-	संकलन	आधार वर्ष
औद्योगिक श्रमिकों के लिये CPI (CPI-IW)	श्रम ब्यूरो, श्रम एवं रोजगार मंत्रालय (मासिक आधार पर प्रकाशित)	2016
कृषि श्रमिकों के लिये CPI (CPI-AL)	श्रम ब्यूरो, श्रम एवं रोजगार मंत्रालय	1986-87
ग्रामीण मज़दूरों के लिये CPI (CPI-RL)	श्रम ब्यूरो, श्रम एवं रोजगार मंत्रालय	1986-87
CPI (ग्रामीण/शहरी/संयुक्त)	NSO, सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय	2012

अन्य सूचकांक

औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (Index of Industrial Production - IIP)

- औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP) विभिन्न क्षेत्रों में औद्योगिक उत्पादन में अल्पकालिक बदलावों को मापता है, जो किसी अर्थव्यवस्था की समग्र औद्योगिक प्रदर्शन को दर्शाता है।
- इसमें तीन मुख्य क्षेत्र शामिल हैं: खनन, विनिर्माण, और बिजली, जो औद्योगिक उत्पादन में उनके योगदान को प्रतिबिंबित करते हैं।
- यह नीति निर्माताओं, निवेशकों और विश्लेषकों के लिए एक महत्वपूर्ण आर्थिक संकेतक है, जो औद्योगिक रुझानों के आधार पर निर्णय और नीति निर्माण में सहायता करता है।
- IIP का बढ़ना औद्योगिक विकास और मजबूत अर्थव्यवस्था को दर्शाता है, जबकि IIP में गिरावट आर्थिक मंदी या कुछ विशिष्ट क्षेत्रों में चुनौतियों का संकेत देती है।
- इसे राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO), सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय द्वारा संकलित और प्रकाशित किया जाता है।
- इसका आधार वर्ष 2011-2012 है।

नोट- आठ कोर क्षेत्र: ये औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP) में शामिल कुल वस्तुओं का 40.27% हिस्सा रखते हैं। भार के अनुसार आठ कोर क्षेत्र उद्योग(घटते क्रम में): रिफाइनरी उत्पाद > बिजली > इस्पात > कोयला > कच्चा तेल > प्राकृतिक गैस > सीमेंट > उर्वरक

मुद्रास्फीति के प्रभाव

1. **ऋणी और लेनदार**
   - ✓ जब कीमतें बढ़ती हैं, तो मुद्रा का मूल्य घट जाता है। यद्यपि देनदार (Debtors) उधार ली गई राशि को वापस कर देते हैं, परंतु मुद्रास्फीति के कारण उस राशि का वास्तविक मूल्य घट चुका होता है। इससे ऋण का बोझ कम हो जाता है और ऋणी को लाभ होता है।
   - ✓ दूसरी ओर, लेनदार (Creditors) को नुकसान होता है क्योंकि उन्हें वही राशि वापस मिलती है, लेकिन वास्तविक मूल्य कम हो चुका होता है।
2. **स्थिर आय समूह**
   - ✓ जिन लोगों की आय (जैसे वेतन) स्थिर होती है, वे मुद्रास्फीति के समय नुकसान में होते हैं क्योंकि वेतन में वृद्धि की गति मूल्य वृद्धि से धीमी होती है।
3. **व्यापारी और निवेशक**
   - ✓ उत्पादक और व्यापारी लाभ में होते हैं क्योंकि कीमतें बढ़ने के साथ ही उनकी इन्वेंट्री का मूल्य भी उसी अनुपात में बढ़ता है, जिससे उनकी बिक्री और लाभ दोनों में वृद्धि होती है।
   - ✓ भूमि संपत्ति के मालिक भी लाभ में होते हैं क्योंकि भूमि की कीमतें सामान्य मूल्य स्तर से तेजी से बढ़ती हैं।
4. **कृषक वर्ग**
   - ✓ भूमिपति (Landlords) को नुकसान होता है क्योंकि उन्हें स्थिर किराया प्राप्त होता है।
   - ✓ छोटे किसान, जो अपनी भूमि पर खेती करते हैं, लाभ में रहते हैं।